

संवेगात्मक रूप से अज्ञान बालक

निराशा, डर और चिंता से सा रूप धारण कर लेती है कि बालक पढ़ने-लिखने या अन्य कोई कार्य करने के उपयुक्त नहीं रहता वह चुपचाप अकेला अपने जीवन के अंधारों में खो जाता है वह एक तरह से अपने आपको सजा देने या विविध कारणों से अपनी आक्रामकता खोज या परेशानी का करव अपनी ओर ही मोड़ना होता है।

2. चिंता मनी विकारों से ग्रस्त बालक (Children Suffering from anxiety disorders)

वेह चिंतित रहना इनकी आदत और स्वभाव में शामिल हो जाता है। इसलिये वे सदैव बेचैन तथा घबराये से रहते हैं। जो कुछ ही रहा है या होगा उसको लेकर ये अधिकतर अकारण ही परेशान रहते हैं। एक चिंता तीक्ष्ण नहीं तब तक अन्य ढेर सारी इन्हें धरने के लिए तैयार रहती है। सदैव भयभीत तथा तनावग्रस्त रहते हैं इनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है जैसे जैसे चिंता मनी विकार का यह रूप तीव्र होने लगता है बालक बहुत ही ज्यादा तनाव, दबाव, निराशा, और असहाय का शिकार होने लगता है। इनकी अनुभूति स्वतःचाल बढ़ जाने, नाड़ी की गति तीव्र हो जाना, हृदय गति बढ़ जाना, मांसपेशियों का उत्तेजित होना, साँस लेने में रुकावट होना, भ्रूक्षित या बेहोश हो जाना, हाथ पैरों में कंपन होना, नींद न होना तथा भ्रूक्ष न लगने सम्बन्धी गड़बड़ियाँ होना, स्काउ शक्ति तथा स्मरण शक्ति में कमी आना, निर्णय लेने में कठिनाई होना।

3. दुर्भ्रितियों के शिकार बालक (Children Suffering from Phobias - School Phobia, Teacher Phobia,